नेफा की लोक-कथाएँ

शिवानन्द नौटियाल

昭和46年度科学研究費購入図書
寄贈 東外大・東洋文化研
同海外学術調査団 氏

東京外国語大学
157759
47.3.31
図書館蔵書

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

याक आदि ऐसे नृत्य हैं जिनका सम्बन्ध इनकी पौराणिक कथाओं से होता है। चेहरे-मुहरे (Mask) लगाकर ये लोग खूब नाचते हैं। अतः ये वन्य जातियाँ अपने में अपार साहित्य लिए हुए हैं। सम्पूर्ण नेफा के अपने-अपने विषय के नृत्य हैं। गाथाओं के आधार पर नृत्य प्रस्तुत करते हैं। कला के क्षेत्र में भी इनका विशिष्ट स्थान है। बाँस के गिलास, कटोरी आदि में इनकी कला देखी जाती है।

अन्ध-विश्वास कहें या इनका दर्शन—परन्तु ये स्वयं अपने आप डाक्टर हैं। बुखार आने पर दातों से काटना, कांटों से पीटना आदि दवायें की जाती हैं। आदमी के मरने पर मोनपा लोग बोटी-बोटी काटकर इधर-उधर फेंक देते हैं। नोकटे गाँव से दूर एक चांग बनाकर मुर्दे को रख देते हैं। चार लट्ठों के ऊपर एक छोटी झोपड़ी होती है जिसमें मुर्दा तथा उसका सामान आ सके—उसे चांग कहते हैं—अभिप्रायः यह है कि मृत्यु के विषय में भी इनके अपने रिवाज़ हैं।

संक्षेप में मैंने कुछ यह नेफा का परिचय दिया है। यदि पूर्ण रूप से लिखा जाय तो एक ही आदिम जाति का वर्णन करना एक महाभारत की रचना करना होगा। भारत सरकार ने इतने अल्प समय में ही नेफा के जन जीवन को बदल दिया है। आगामी दस वर्षों में हमारे ये भाई हमारे साथ भारत-सेवा में भी आगे आजायेंगे। कुछ आ गये हैं। शिमला, दार्जिलिंग, मसूरी के समान बमडीला, जीरो, खोनसा होंगे। पासीघाट एक औद्योगिक केन्द्र होगा।

मैंने स्वयं अपने कुछ दिन इन आदिम-जाति भाइयों के साथ बिताये। उनके गीतों-गाथाओं को सुना। घने-घने जंगलों को बर्षा की बौछारों में पार किया। डिम-डिम (एक प्रकार की मक्खी) ने मेरा शृंगार किया—मतलब सारा बदन काला कर दिया जैसे कि चेचक हुआ हो। कई भयानक कीड़ों व जोकों ने मेरा स्वागत किया। अभी जब मैं दूसरी बार नेफा गया तो सड़कें बन गई हैं—मोटरे चल रहीं हैं—आप यदि कभी नेफा जायंगे तो शायद तब तक रेलें भी जा चुकेंगी। खैर, अभी उन अपने भाइयों की लोक कथाओं का अध्ययन करें। यदि आपने इन्हें पसन्द किया तो और भी रसीली कथाएँ पढ़ सकेंगे। एक समय वह आयेगा जब आप स्वयं नेफा के भूभाग का अवलोकन करेंगे।

मैं अपने खेला, जयरामपुर, नामपोंग और बमडीला के मित्रों का ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे इन कथाओं को सुनाया। उनके ही प्रयत्न एवं लग्नशीलता के कारण मैं अपने इस उद्देश्य में सफल हुआ।

मै डा० एलविन, श्री पी० एन० कौल एवं श्री के० एल० मेहता का अति कृतज्ञ हूँ, जिनके प्रेरणाप्रद कार्य क्षेत्र के कुछ मोती मैं भी चुन सका हूँ। पहाड़ों में जाने एवं संघर्षमय जीवन में जूझने की हिम्मत देने वाली मेरी पत्नी वागेश भी समान अधिकारिणी है; परन्तु उसे क्या दूँ—सब तो उसी का है।

अन्त में मैं सभी पाठकों एवं विद्वानों की राय जानने को उत्सुक हूँ! मेरा प्रयास आपके हाथ में है—आशा है सत्परामर्श मिलेगा ताकि भविष्य में यह प्रयास विशद् रूप पा सके।

—शिवानन्द नौटियाल

क्रम

1.	मिसमी लड़का और साँप कन्या	1
2.	एलङ्ग की बुद्धिमत्ता	6
3.	मेंढ़क और चीता	11
4.	भाग्य की करामात	14
5.	लड़के की करामात	20
6.	पापी से भगवान	23
7.	आबूतेनी का परिवार	28
1.	और मकान बन गया	33
9.	उसका प्यार	36
10.	चार बहिनें और एक भाई	42
11.	बुढ़िया और उसका दामाद	49
12.	निकोमा और उसके बच्चे	54
13.	धम्माइयों के चेहरों पर काले चिह्न क्यों ?	61
14.	भगवान मताई और उसके दो दूत	66